Saarth E-Journal

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X
Peer Reviewed
Vol.7 No.18

Impact Factor
Quarterly
Oct-Nov-Dec 2022

मोहन राकेश जीवन एवं रचना कर्म

डॉ. अजय के. पटेल

सारांश:

मोहन राकेश मूलतः एक सिंधी परिवार से थे। उनके पिता कर्मचन्द बहुत पहले सिंध से पंजाब आ गए थे। वे हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नाट्य लेखक और उपन्यासकार हैं। समाज के संवेदनशील व्यक्ति और समय के प्रवाह से एक अनुभूति क्षण चुनकर उन दोनों के सार्थक सम्बन्ध को खोज निकालना, राकेश की कहानियों की विषय-वस्तु है। मोहन राकेश हिंदी साहित्य के उन चुनिंदा साहित्यकारों में से हैं जिन्हें '**नयी कहानी आंदोलन**' का नायक माना जाता है, और साहित्य जगत में अधिकांश लोग इन्हें उस दौर का '**महानायक**' कहते हैं। मोहन राकेश ने '**आषाढ़ का एक दिन**' के रूप में हिंदी का पहला आधुनिक नाटक भी लिखा। कहानीकार-उपन्यासकार प्रकाश मनु भी ऐसे ही लोगों में शामिल हैं, जो नयी कहानी के दौर में मोहन राकेश को सर्वोपरि मानते हैं। आज हम **मोहन राकेश का जीवन परिचय** के साथ ही इनका **साहित्यिक परिचय, रचना,कृतियाँ, भाषा-शैली, उपन्यास** और नाटकों के बारे में विस्तार से जानेंगे।

मुख्य शब्द: साहित्य, भाषा, जीवन परिचय, कृतित्व।

प्रस्तावना:

मोहन राकेश का जीवन परिचय (जीवनी) :

हिंदी के महान उपन्यासकार **मोहन राकेश** का जन्म ८जनवरी, १९२५को अमृतसर, पंजाब में हुआ था। उनके पिता पेशे से वकील थे और साथ ही साहित्य और संगीत के प्रेमी भी थे। पिता की साहित्यिक रुचि का प्रभाव मोहन राकेश पर भी पड़ा। मोहन राकेश ने पहले

लाहौर के 'ऑरीएंटल कॉलेज' से 'शास्त्री' की परीक्षा पास की। किशोरावस्था में सिर से पिता का साया उठने के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और पढ़ाई जारी रखी। इसके बाद उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय' से हिंदी और अंग्रेजी में एम. ए. किया।एक शिक्षक के रूप में पेशेवर जिंदगी की शुरुआत करने के साथ ही उनका रुझान लघु कहानियों की ओर हुआ। बाद में उन्होंने कई नाटक और उपन्यास लिखे। बाद में अनेक वर्षों तक दिल्ली, जालंधर, शिमला और मुंबई में अध्यापन कार्य करते रहे।

मोहन राकेश का वैवाहिक जीवन

मोहन राकेश अपने जीवन में तीन बार विवाह किया था | उनकी पहली पत्नी का नाम शीला था जो 'वीमेंस ट्रेनिंग कॉलेज दयालबाग' में कार्यरत थीं | शीला से उनके विवाह वर्ष 1950 में हुआ | शीला एक बड़े और आर्थिक रूप से बेहद ही सबल परिवार की पुत्री थी | विवाह के दौरान ही वधु पक्ष के आडम्बरों ने राकेश जी के मन में कुंठा के भाव को पैदा कर दिया था | शीला में आर्थिक स्वावलंबन का दंभ था | राकेश की माता जी के प्रति भी उनका व्यवहार सही नहीं था | वह राकेश जी के लेखन को भी महत्त्व नहीं देती थी | अतः राकेश जी जिस आत्मीय संबंधों से युक्त परिवार और घर की परिकल्पना करते थे, वह शीला के साथ पूरा नहीं हो सकता था | भावशून्य और आत्मीयता रहित अपने इस वैवाहिक सम्बन्ध को समाज के भय से मात्र ढोते रहना उन्हें उचित नहीं लगा | अतः उन्होंने शीला से तलाक ले लिया |

उनकी दूसरी पत्नी का नाम पुष्पा था | वह उनके दोस्त मोहन चोपड़ा की बहन थी जिसे उन्होंने सिर्फ देखा था और बिना उसे जाने समझे विवाह कर लिया | पहली पत्नी के स्वभाव के विपरित उन्हें लगा कि सीधी-सादी, घरेलु किस्म की लड़की से विवाह करने से उनके वैवाहिक जीवन में वह आत्मीयता और ठहराव मिलेगा जिसकी उन्हें तलास थी | किन्तु इसके विपरित पुष्पा मानसिक रूप से सबल नहीं थी | वह कभी हँसते हँसते बेहाल हो जाया करती तो कभी कुपित हो देवी बन श्राप देने लगती | उनके दूसरे विवाह का निर्णय भी गलत साबित हुआ और उनका वैवाहिक जीवन पहले की अपेक्षा और भी नरक बन गया | उनके वैवाहिक जीवन में ठंडापन आ गया | घर गृहस्थी से उनका मन उब गया |

मोहन राकेश के जीवन में घर की तलास तब पूरी हुयी जब **अनीता औलक** नामक युवती ने उनके जीवन में प्रवेश किया | अनीता ने उनके जीवन के बिखराव को समेटा, उनके चोट खाए मन को सम्हाला जिससे उनके मन में जीवन के प्रति लगाव पैदा हुआ | वर्ष **1962** में कमलेश्वर और उनकी माँ के सामने इन दोनों का विवाह संपन्न हुआ और उन्होंने फिर से अपनी गृहस्ती बसाने का प्रयास किया | उनका यह विवाह जीवन पर्यंत मधुरता के साथ बना रहा |

साहित्यिक परिचय:

अपनी साहित्यिक अभिरुचि के कारण मोहन राकेश का अध्यापन कार्य में मन नहीं लगा और एक वर्ष तक उन्होंने 'सारिका' पत्रिका का सम्पादन किया। इस कार्य को भी

अपने लेखन में बाधा समझकर इससे किनारे कर लिया और जीवन के अंत तक स्वतंत्र लेखन ही इनके जीविकोपार्जन का साधन रहा।**हिंदी नाटकों में भारतेंदु हरिश्चंद्र और जयशंकर प्रसाद के बाद का दौर मोहन राकेश का दौर है, जिसमें हिंदी नाटक दुबारा रंगमंच से जुड़े। हिंदी नाट्य साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र और जयशंकर प्रसाद के बाद यदि कोई लीक से हटकर नाम उभरता है तो वह मोहन राकेश का है। बीच में और भी कई नाम आते हैं, जिन्होंने** आधुनिक हिंदी नाटक की विकास-यात्रा **में महत्वपूर्ण पड़ाव तय किए, किंतु मोहन राकेश का लेखन एक अलग ही स्थान पर नज़र आता है। इसलिए ही नहीं कि उन्होंने अच्छे नाटक लिखे, बल्कि इसलिए भी कि उन्होंने हिंदी नाटक को अंधेरे बंद कमरों से बाहर निकाला और एक नए दौर के साथ जोड़कर दिखाया।**

राकेश जी ने स्वतन्त्रता के पश्चात् अपने साहित्य में भारतीय मानस के नयी परिस्थितियों में बदले हुए जीवन को भोगने का सर्वप्रथम सफल चित्रण किया। इन्होंने हिन्दी - कहानी को प्राचीन परम्परा से मुक्त कर नयी कहानी के रूप में प्रतिष्ठित किया। इनकी 'नये बादल' कहानी इसी दिशा में सफल प्रयोग है।

इन्होंने अपने उपन्यासों में आज के निरन्तर बदलते हुए मानव्जीवन के जटिल द्वन्द्व का यथार्थ अंकन किया है। मोहन राकेश जी ने यात्रावृत्त नामक विधा को नया स्वरूप और आधार प्रदान किया। इनके 'आखिरी चट्टान तक' नामक यात्रावृत्त में प्रकृति का मार्मिक चित्रण और नये जीवन-मूल्यों की खोज की गयी है। इन्होंने नाटक के क्षेत्र में युगान्तर उपस्थित करके हिन्दी की नयी नाटक विधा को जन्म दिया। प्रसाद जी के बाद हिन्दी नाटक विधा में नये युग का सूत्रपात मोहन राकेश ने ही किया।

रचना / कृतियाँ :

मोहन राकेश की रचनाएँ पाठकों और लेखकों के दिलों को छूती हैं। एक बाद जो उनकी रचना को पढ़ता है तो वह पूरी तरह से राकेश के शब्दों में डूब जाता है। राकेश के उपन्यास 'अंधेरे बंद कमरे''न आने वाला कल', 'अंतराल' और 'बाकमला खुदा' है। इसके अलावा 'आधे अधूरे', 'आषाढ़ का एक दिन' और '*लहरों के राजहंस*' उनके कुछ मशहूर नाटक हैं। 'लहरों के राजहंस' उनका सबसे विख्यात नाटक रहा। मोहन राकेश ने नाटक, उपन्यास, कहानी, यात्रा वृत्तांत, निबंध आदि विधाओं में विपुल साहित्य की रचना की।मोहन राकेश पहले कहानी विधा के ज़रिए हिंदी में आए। उनकी 'मिसपाल ', 'आद्रा', 'ग्लासटैंक', 'जानवर' और 'मलबे का मालिक' आदि कहानियों ने हिन्दी कहानी का परिदृश्य ही बदल दिया। वे 'नयी कहानी आंदोलन' के शीर्ष कथाकार के रूप में चर्चित हुए। उनकी कहानियों में एक निरंतर विकास मिलता है, जिससे वे आधुनिक मनुष्य की नियति के निकट से निकटतर आते गए हैं। उनकु खूबी यह थी कि वे कथा-शिल्प के उस्ताद थे और उनकी भाषा में ग़ज़ब का सधाव ही नहीं, एक शास्त्रीय अनुशासन भी है। कहानी से लेकर उपन्यास तक में उनकी कथा-भूमि

शहरी मध्य वर्ग है। कुछ कहानियों में भारत-विभाजन की पीड़ा बाहर सशक्त रूप में अभिव्यक्ति हुई है। कहानी के बाद राकेश को सफलता नाट्यलेखन के क्षेत्र में मिली है।

भाषा-शैली :

मोहन राकेश की भाषा परिष्कृत, परिमार्जित, संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है। इनकी भाषा विषय, पात्र और देशकाल के अनुसार बदलती रहती है। एक ओर इनकी भाषा में संस्कृत की तत्सम शब्दावली दिखाई देती है तो दूसरी ओर सरल एवं काव्यात्मक भाषा भी मिलती है।बोलचाल के सरल शब्दों और स्थान-स्थान पर उर्दू, अंग्रेजी आदि के प्रचलित शब्दों के प्रयोग से इनकी भाषा में आधुनिकता का गुण आ गया है। मोहन राकेश जी की भाषा यद्यपि मुख्य रूप से संस्कृत के तत्सम शब्दों से युक्त है, तथापि उनमें अंग्रेजी, उर्दू एवं क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग भी दृष्टिगोचर होते हैं। इस कारण इनकी भाषा वातावरण, प्रकृति एवं पात्रों का सजीव चित्र प्रस्तुत करने में समर्थ है।कहानियों, उपन्यासों और यात्रा-संस्मरणों में मोहन राकेश जी ने वर्णात्मक शैली में किया है। सरल भाषा के द्वारा इन्होंने यथार्थ चित्र उपस्थित करने का कार्य भी इसी शैली में किया है। इन्होंने अपनी रचनाओं में भावात्मक शैली का सर्वाधिक प्रयोग किया है। भावात्मक एवं काव्यात्मक गुणों पर आधारित इनकी यह शैली बड़ी रोचक एवं लोकप्रिय रही है।

इन्होंने यात्रा निबंधों में प्रायः चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। इससे प्राकृतिक चित्र सजीव हो उठे है। इन्होंने अपनी रचनाओं में अपनी बिम्ब-विधायिनी शक्ति का परिचय दिया है। राकेश जी ने अपने यात्रा वृत्तांतों में विवरणात्मक शैली का भी अद्भुत प्रयोग किया है। मोहन राकेश जी की भाषा-शैली किसी भी पाठक को सहज ही आकर्षित कर लेने में समर्थ है। विचारों एवं भावों के अनुकूल प्रयुक्त की गई उनकी भाषा-शैली अत्यंत प्रभावपूर्ण है।

समापन:

मोहन राकेश की रचनाओं में उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक मिलती है। मोहन राकेश की रचनाओं में चिन्तन की प्रधानता है। प्राकृतिक सौन्दर्य का अंकन भी उनके गद्य की महत्वपूर्ण विशेषता है। नाटककार होने के कारण इनकी शैली में सजीवता, सहजता एवं बोधगम्यता इनकी भाषा की अन्य विशेषताएँ हैं। यात्रा वृत्तांत लेखक के रूप में मोहन राकेश का विशेष स्थान है। इनके यात्रा-वृत्तांत कलात्मक, साहित्यिक और भावपूर्ण है। इनके ये यात्रा विवरण कथात्मक हो गए हैं। लेखक ने कन्याकुमारी तथा उसके आस-पास के क्षेत्र का सजीव चित्र उपस्थित किया है। मोहन राकेश मूलतः कथाकार हैं। उनकी रचनाओं में उनका व्यक्तित्व स्पष्ट रूप में झलकता है। मोहन राकेश भावुक रचनाकार थे, लेखक ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को सहज और सरल शब्दावली में व्यक्त किया है। लेखक ने सरल-सुबोध

शैली में अपने विषय का प्रतिपादन किया है। वे किसी दृश्य का प्रभावपूर्ण चित्र खींचने में पूर्णतया सिद्धहस्त हैं।

संदर्भ सूची

१. https://hi.wikipedia.org/wiki
२. https://mycoaching.in/mohan-rakesh
३. https://hindilearning.in
४. http://ir.unishivaji.ac.in:8080/jspui/bitstream
५. https://bharatdiscovery.org/india